तांत्रिक सिद्धियां

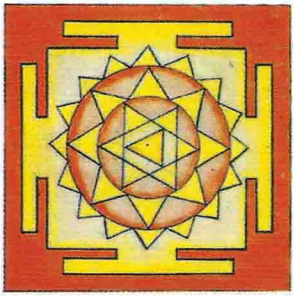

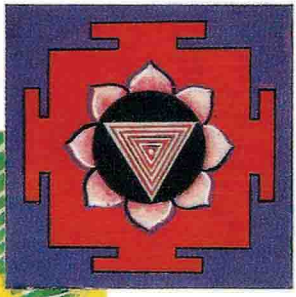

डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली

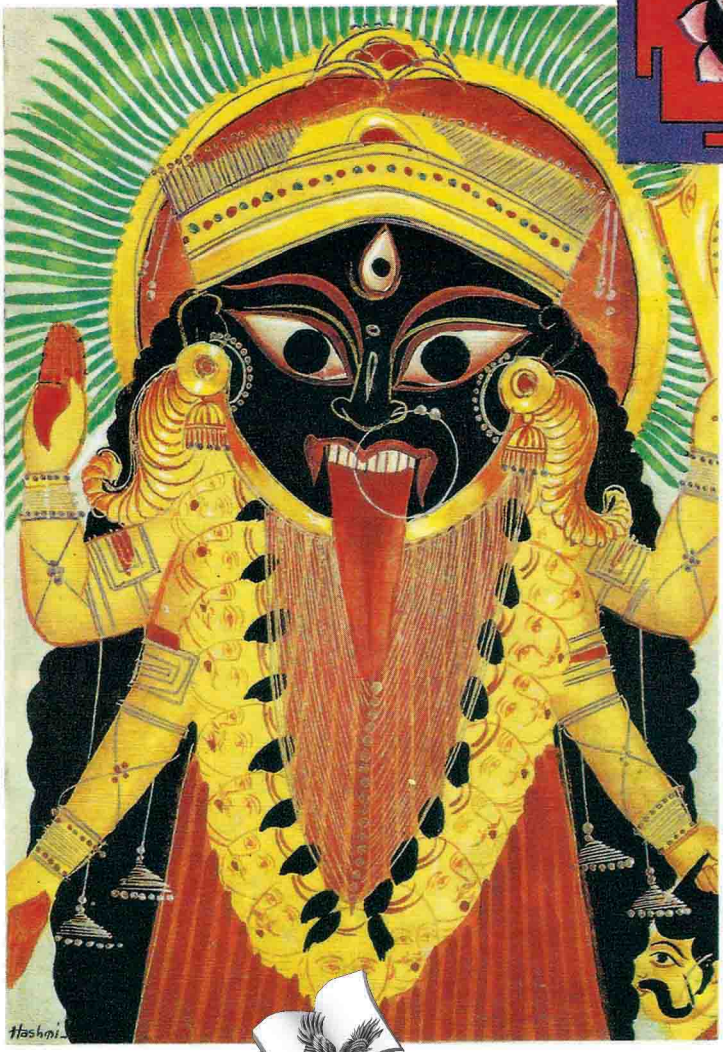

वी एण्ड एस पब्लिशर्स

तांत्रिक सिद्धियां

लब्ध प्रतिष्ठित तांत्रिक सम्राट डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली के जीवन के महान् अनुभव, सिद्धियां और साधनाएं

- क्या तांत्रिक सिद्धियां मानव कल्याण के निमित्त उपयोग में लाई जा सकती हैं?
- जब मंत्र मनुष्य जीवन को सुखी, समृद्ध और उज्ज्वल बना सकते हैं...
- जब यंत्र व्यक्ति को स्वस्थ, सुंदर, चिंता रहित और खुसहाल बना सकत हैं...
- तो निश्चय ही तंत्र भी काल की ऐसी ही देन हैं, जो कल्याणकारी हैं।
- और इस पुस्तक में अपने समय के युगपुरुष ने इन तथ्यों को पुरी तरह उद्‌घाटित कर दिया है।

तांत्रिक सिद्धियां

आर्शीवाद
डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली

संपादन
योगी ज्ञानानन्द

संयोजन
कैलाशचन्द्र

वी एण्ड एस पब्लिशर्स

प्रकाशक

वी एण्ड एस पब्लिशर्स

F-2/16, अंसारी रोड, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002
☎ 23240026, 23240027 • *फैक्स:* 011-23240028
E-mail: info@vspublishers.com • *Website:* www.vspublishers.com

शाखा: हैदराबाद
5-1-707/1, ब्रिज भवन (सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया लेन के पास)
बैंक स्ट्रीट, कोटी, हैदराबाद - 500 095
☎ 040-24737290
E-mail: vspublishershyd@gmail.com

शाखा : मुम्बई
जयवंत इंडस्ट्रिअल इस्टेट, 1st फ्लोर-108, तारदेव रोड
अपोजिट सोबो सेन्ट्रल, मुम्बई - 400 034
☎ 022-23510736
E-mail: vspublishersmum@gmail.com

फ़ॉलो करें:

© **कॉपीराइट:** वी एण्ड एस पब्लिशर्स

ISBN 978-93-505738-2-2

DISCLAIMER

इस पुस्तक में सटीक समय पर जानकारी उपलब्ध कराने का हर संभव प्रयास किया गया है। पुस्तक में संभावित त्रुटियों के लिए लेखक और प्रकाशक किसी भी प्रकार से जिम्मेदार नहीं होंगे। पुस्तक में प्रदान की गयी पाठ्य सामग्रियों की व्यापकता या सम्पूर्णता के लिए लेखक या प्रकाशक किसी प्रकार की वारंटी नहीं देते हैं।

पुस्तक में प्रदान की गयी सभी सामग्रियों को व्यावसायिक मार्गदर्शन के तहत सरल बनाया गया है। किसी भी प्रकार के उद्धरण या अतिरिक्त जानकारी के स्रोत के रूप में किसी संगठन या वेबसाइट के उल्लेखों का लेखक या प्रकाशक समर्थन नहीं करता है। यह भी संभव है कि पुस्तक के प्रकाशन के दौरान उद्धृत बेवसाइट हटा दी गयी हो।

इस पुस्तक में उल्लिखित विशेषज्ञ के राय का उपयोग करने का परिणाम लेखक और प्रकाशक के नियंत्रण से हटकर पाठक की परिस्थितियों और कारकों पर पूरी तरह निर्भर करेगा।

पुस्तक में दिये गये विचारों को आजमाने से पूर्व किसी विशेषज्ञ से सलाह लेना आवश्यक है। पाठक पुस्तक को पढ़ने से उत्पन्न कारकों के लिए पाठक स्वयं पूर्ण रूप से जिम्मेदार समझा जायेगा।

उचित मार्गदर्शन के लिए पुस्तक को माता-पिता एवं अभिभावक की निगरानी में पढ़ने की सलाह दी जाती है। इस पुस्तक के खरीददार स्वयं इसमें दिये गये सामग्रियों और जानकारी के उपयोग के लिए सम्पूर्ण जिम्मेदारी स्वीकार करते हैं।

इस पुस्तक की सम्पूर्ण सामग्री का कॉपीराइट लेखक/प्रकाशक के पास रहेगा। कवर डिजाइन, टेक्स्ट या चित्रों का किसी भी प्रकार का उल्लंघन किसी इकाई द्वारा किसी भी रूप में कानूनी कार्रवाई को आमंत्रित करेगा और इसके परिणामों के लिए जिम्मेदार समझा जायेगा।

मन की बात

बात प्रारंभ करता हूं, कामाख्या के तांत्रिक सम्मेलन से। इस सम्मेलन की काफी कुछ चर्चा हम लोगों के बीच थी; विशेषकर जो तंत्र में विश्वास रखते थे या तांत्रिक क्रियाएं जानते थे, उनके लिए यह एक अभूतपूर्व अवसर था। जबकि तंत्र की आराध्य कामाख्या स्थान पर तांत्रिक सम्मेलन होने जा रहा था। यद्यपि इसकी चर्चा पत्र-पत्रिकाओं में नहीं थी, परंतु तंत्र के जानने वालों के लिए यह सूचना अनुकूल थी और इसमें भारत के ही नहीं, कुछ विदेशों के भी तांत्रिकों के भाग लेने के बारे में समाचार सुनने को मिले थे।

यह भी सुना था कि इसमें पूरे भारत से विशिष्ट तांत्रिक भाग ल.गे और उन तांत्रिकों के भाग लेने की भी यह शर्त थी कि इसमें केवल वे ही तांत्रिक भाग ले सकते हैं जो कि दस महाविद्याओं में से कोई एक महाविद्या सिद्ध की हो। तंत्र के क्षेत्र में यह काफी ऊंचे स्तर की बात होती है। यह शर्त इसलिए रख दी थी, जिससे कि विशिष्ट तांत्रिक ही भाग ले सक्ऊ, सामान्य तांत्रिकों से प्रांगण भर जाए और व्यर्थ में ही समय बीत जाए, आयोजक ऐसा नहीं चाहते थे।

यह आयोजन न तो राजनीतिक स्तर पर था और न सामाजिक स्तर पर। इसके पीछे न किसी सेठ साहूकार का धन था और न कौतूहल आदि। इसका एकमात्र उद्देश्य यही था कि बदलते हुए परिवेश में तांत्रिकों से समाज को क्या योगदान हो सकता है, और समाज उनसे किस प्रकार से लाभ उठा सकता है?

इसके अलावा यह भी ज्ञात करना था कि वास्तव में उच्चकोटि के कितने तांत्रिक हैं। इसके लिए उन माध्यमों को चुना था, जिनका संपर्क सुदूर हिमालय स्थित योगियों से और तांत्रिकों से भी था।

यहां जब मैं 'तांत्रिक' शब्द का प्रयोग कर रहा हूं तो इसका तात्पर्य केवल तांत्रिक ही नहीं अपितु मंत्र शास्त्र के जानने वाले व्यक्तियों या विद्वानों से भी है। मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि इस सम्मेलन में उच्च कोटि के मंत्र शास्त्री और तंत्र शास्त्रियों को बुलाना था और परस्पर विचार-विमर्श करना था।

साल भर से इसके बारे में चर्चा चल रही थी और हम सब लोग इसमें भाग लेने के लिए उत्सुक थे। अधीरता से उस तारीख की प्रतीक्षा कर रहे थे, जब यह तांत्रिक सम्मेलन होना था। कुल 10 दिन का यह सम्मेलन था और उन सभी तांत्रिकों से संपर्क स्थापित किया जा चुका था, जो इस क्षेत्र में विशिष्ट थे या अति विशिष्ट थे। इसके साथ-ही-साथ उन मंत्र शास्त्रियों या मंत्र के जानने वालों और विद्वानों को भी बुलाया था, जिन्होंने उस क्षेत्र में अभूतपूर्व कार्य किया हो, मंत्रों के माध्यम से जो कुछ भी करने में समर्थ हों।

उन सभी योगियों और साधकों से संपर्क किया जा चुका था, जिन्होंने अपने जीवन का बहुत बड़ा हिस्सा उस विशिष्ट साधना में बिताया हो, और यह प्रसन्नता की बात थी कि भारत के अति विशिष्ट मंत्र-मर्मज्ञों और तांत्रिकों ने भाग लेने की स्वीकृति दी थी। इनमें पगला बाबा, स्वामी चैतन्य मूर्ति, कृपालु स्वामी, बाबा भैरवनाथ, स्वामी प्रेत बाबा, अघोरी गिरजानंद, अघोरी खर्परानंद भारती, त्रिजटा अघोरी, आदि कई ऐसी विशिष्ट विभूतियां थीं, जिनके बारे में लाखों करोड़ों बार सुना था, इनके साथ आश्चर्यजनक कहानियां जुड़ी हुई थीं, जो विशिष्ट सिद्धियों के स्वामी थे। इस प्रकार के तांत्रिकों, मांत्रिकों और अघोरियों का सम्मेलन एक स्थान पर हो, यह हम जैसों के लिए आश्चर्यजनक था।

इस सम्मेलन में निर्णय यही था कि इसमें वाम मार्गी और दक्षिण मार्गी साधना से संपन्न साधक एक स्थान पर एकत्र हों और अपनी सिद्धियों का प्रदर्शन करें। सिद्धियों को प्राप्त करने में जो बाधाएं आ रही ह ै, उनका निराकरण किस प्रकार से हो तथा इन साधनाओं और सिद्धियों का लाभ जनमानस को किस प्रकार से मिल सके, इसका निर्णय और विचार इस सम्मेलन में होना था।

इसके अलावा पिछले पांच हजार वर्षों में यह पहला अवसर था, जबकि इस प्रकार के अति विशिष्ट योगी, साधक, तांत्रिक और मांत्रिक एक स्थान पर एकत्रित हुए। इसके लिए कुछ विशिष्ट योगियों ने जो प्रयत्न किया था, वह वास्तव में ही सराहनीय था, और उनके ही प्रयत्नों से यह असंभव कार्य संभव हो सका था। उनके प्रयत्नों से ही सुदूर हिमालय स्थित साधकों से संपर्क हो सका था और उनको उस सम्मेलन में भाग लेने के लिए तैयार किया जा सका था।

प्रयत्न यह था कि इस सम्मेलन की चर्चा ज्यादा न हो, क्योंकि इससे पूरे भारत से लोग दर्शनों के लिए या मिलने के लिए एकत्र हो जाते और इससे अव्यवस्था-सी उत्पन्न हो जाती; फलस्वरूप जिस उद्देश्य के लिए यह सम्मेलन बुलाया जा रहा था, वह उद्देश्य ही अपने आप में समाप्त हो जाता। इसके अलावा साधकों ने भी यह शर्त लगा दी थी कि हम जन-साधारण के सामने न तो जाना चाहते हैं और न अपना या अपनी सिद्धियों का प्रदर्शन करना चाहते हैं।

उनकी बात अपने स्थान पर सही भी थी और यह उचित ही था कि जिस उद्देश्य के लिए यह अभूतपूर्व सम्मेलन हो रहा है, उसकी गरिमा बनी रह सके, साथ-ही-साथ इसमें जो महापुरुष या विशिष्ट साधक भाग ले रहे हैं, उनकी प्रतिष्ठा में किसी प्रकार की आंच न आए तथा किसी प्रकार की न्यूनता न रहे।

पिछले बीस वर्षों में मैंने तंत्र के क्षेत्र मे घुसने का प्रयत्न किया है और तारा साधना को, जो कि दस महाविद्याओं में से एक है सिद्ध किया है और सफलतापूर्वक प्रयोग भी किया है, इससे मैं अपने आपको कुछ समझने लग गया था। सही कहूं तो अपने आपको बहुत कुछ समझने लग गया था, परंतु इस सम्मेलन में भाग लेने पर ज्ञात हुआ कि मैं कुछ भी नही हूं या यूं कहूं कि भाग लेने वाले साधकों के पास जो सिद्धियां हैं, उनके सामने मैं नगण्य हूं, धूल के कण जितना भी मेरा महत्त्व नहीं है। यदि मैं सैकड़ों वर्षों तक उनके चरणों में बैठकर ज्ञान प्राप्त करूं तब भी उनकी थाह नहीं पाई जा सकती।

इस तारा साधना की कड़ी परीक्षा देने के बाद ही मुझे इस सम्मेलन में भाग लेने की अनुमति मिली थी। मैं सोचता हूं कि पिछले बीस वर्षों में भी मैं जो नहीं जान सका था, वह इस सम्मेलन से जान पाया। यह मेरे पूर्व जन्म और इस जन्म का पुण्य प्रभाव ही था, जिससे कि मैं इस सम्मेलन में भाग लेने का अधिकारी माना गया। यह मेरी पीढ़ी का सौभाग्य है कि इस पीढ़ी में इस प्रकार का अभूतपूर्व सम्मेलन हो सका और हम अपनी आंखों से इस सम्मेलन को देख सके। वह मेरे पुण्यों का उदय था, जिससे कि मैं उन विशिष्ट साधकों को देख सका, जिनके दर्शन ही दुर्लभ हैं। यदि तंत्र और मंत्र इस देश में जीवित हैं तो केवल इस प्रकार के विशिष्ट साधकों के बल पर ही। ये साधक नहीं, मंत्र-तंत्र के जीवंत रूप हैं।

जीवन के प्रारंभ में मैं कानून का विद्यार्थी रहा था और मैंने उच्च श्रेणी में कानून की परीक्षा पास की थी, पर मेरे द्वारा एक बार एक गलत फैसला हो जाने के कारण एक निर्दोष को फांसी की सजा मिल गई। यह मेरी गलती थी। उस गलती से मैं इतना अधिक दुखी रहा कि मैंने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया और हमेशा के लिए नौकरी छोड़ दी। इसके बाद पत्रकारिता के क्षेत्र में मैंने भाग लिया और अपनी पैनी दृष्टि तथा निर्मम लेखनी से मैं शीघ्र ही पत्रकारों के बीच लोकप्रिय हो गया और पत्रकार-संघ का अध्यक्ष भी कई वर्षों तक रहा, अंग्रेजों का जमाना होने के कारण मुझ पर उनकी क्रुद्ध दृष्टि शुरू से ही थी, अतः उन्होंने मेरे चारों तरफ घेराबंदी प्रारंभ की। इस घेरा बंदी में मैं जकड़ा जाऊं, इससे पहले ही मैंने संसार छोड़ दिया, शादी मैंने की नहीं थी, इसलिए घर-बार की चिन्ता थी नहीं। निश्चय यही कर लिया था कि आगे का पूरा जीवन साधना में ही व्यतीत करना है और अज्ञात रहस्यों की खोज में जीवन बिता देना है।

प्रारंभ से ही मैं तार्किक बुद्धि का रहा हूं, सहज ही मैं किसी से प्रभावित होता नहीं, बातचीत में मेरी पत्रकारिता तुरंत सामने आ जाती है और जिस व्यक्ति से बातचीत करता हूं, अपने पैने प्रश्नों से उसके व्यक्तित्व की चीरफाड़ इस प्रकार से कर लेता हूं कि वह सहज ही मेरे सामने नंगा हो जाता है, भीतर में जो नकलीपन होता है सामने आ जाता है और इस प्रकार मैं उसके व्यक्तित्व से प्रभावित होने की अपेक्षा वह मेरे व्यक्तित्व से प्रभावित हो जाता है।

साधु जीवन धारण करने के बाद मैंने इस आदत के कारण कई शत्रु बना लिए। जो भी विशिष्ट साधु या तांत्रिक होता उससे मिलता और दो-चार घंटों में ही मैं उसकी कलई खोल देता। उसके भीतर जो कमजोरी होती, वह मैं उसके सामने ही उजागर कर देता और इस प्रकार मेरी पत्रकारिता मुझे सहज ही किसी पर विश्वास नहीं करने देती।

आज भी मैं इस आदत को छोड़ नहीं पाया हूं। कानून का विद्यार्थी और अधिकारी होने के नाते बहुत अच्छी तरह से जिरह कर लेता हूं और सामने वाले के अस्त्रों से ही उसको घायल कर लेता हूं, साथ-ही-साथ मेरी पत्रकारिता सामने वाले को पूरी तरह से नंगा करके रख देती है, इसलिए मैं अपने जीवन में बहुत ही कम लोगों से प्रभावित रहा हूं और किसी के प्रति मेरे मुंह से 'गुरु' शब्द तो निकल ही नहीं पाया है, क्योंकि जब तक अत्युच्च साधना से संपन्न व्यक्तित्व नहीं मिलता, तब तक मैं उसके सामने नतमस्तक हो ही नहीं सकता। पिछले बीस वर्षों में मैं सैकड़ों साधुओं, मांत्रिकों और तांत्रिकों के संपर्क में आया और उनसे सीखने को मिला, परंतु प्रभावित किसी से भी नहीं हो पाया। एक प्रकार से मुझे ये सभी खंड-खंड रूप में अवश्य मिले, उनका खंडित व्यक्तित्व अवश्य देखने को मिला, परंतु पूर्ण व्यक्तित्व मेरे सामने कोई आया ही नहीं और इसीलिए मेरा सिर किसी के चरणों में पूरी तरह से झुक ही नहीं पाया। जब तक मेरा व्यक्तित्व प्रभावित नहीं होता तब तक मेरे होंठ 'गुरु' कह ही नहीं पाते। एक प्रकार से देखा जाए तो मैं पिछले बीस वर्षों में 'गुरुहीन' ही रहा हूं। यद्यपि इस अवधि में मैंने तंत्र की कुछ क्रियाएं अवश्य सीखीं, कुछ लोगों के कार्यों से प्रभावित भी हुआ, कुछ विशिष्ट साधकों के संपर्क में भी आया, भूत बाबा से मैंने विशिष्ट तांत्रिक साधना तारा-साधना भी सीखी और उनके प्रति अपने मन में अनुकूल धारणाएं भी बनाई, परंतु हर बार मेरी पत्रकारिता बीच में आ जाती और इस वजह से उनके खंड व्यक्तित्व से तो प्रभावित हो जाता, परंतु अभी तक कोई ऐसा पूर्ण व्यक्तित्व नहीं मिला जो वास्तव में ही उच्च कोटि की क्रियाओं से संपन्न हो और मेरे लिए गुरु पद का अधिकारी हो।

कुछ तांत्रिक अवश्य मिले, वे वाममार्गी थे, पर उन्हें 'दक्षिणमार्ग' साधना का क, ख, ग भी ज्ञात नहीं था, कुछ ऐसे साधक भी मिले जो तंत्र की दक्षिणमार्गी साधना में निष्णात थे, पर वाम मार्ग साधना में शून्य थे।

कुछ हठ योगी भी मिले जिनके पास कुछ सिद्धियां थीं, पर वे सामान्य सिद्धियां थीं। साधारण नागरिक उससे प्रभावित हो सकते हैं, पर मेरे प्रभावित होने का तो प्रश्न ही नहीं था। कुछ मंत्र शास्त्री मिले जो मंत्रों के माध्यम से अलौकिक कार्य करने में सक्षम थे, परंतु इसके अलावा उनके पास कुछ भी नहीं था।

मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि यह मेरे जीवन का दुर्भाग्य ही है कि इतना भटकने के बाद भी कोई पूर्ण साधक नहीं मिला, जिसे दक्षिणमार्ग और वाममार्ग के तंत्र का पूर्ण ज्ञान हो और जो इस क्षेत्र का अधिकारी माना जाता हो, साथ ही जिसे मंत्र का भी उच्च कोटि का ज्ञान हो और अघोरी साधना या गौरक्ष साधना के बारे में विशेष जानकारी हो। एक ही व्यक्तित्व में जब तक इन सारे गुणों का समावेश नहीं होता तब तक वह पूर्ण सक्षम कहलाने में समर्थ नहीं हो सकता और जब तक ऐसा व्यक्तित्व मेरे सामने नहीं आता तब तक मेरा सिर किसी के चरणों में नहीं झुक सकता था।

ऐसी स्थिति में जब मैंने इस तांत्रिक सम्मेलन की चर्चा सुनी और यह ज्ञात हुआ कि इसमें विशिष्ट साधक भाग लेंगे तो मन में आशा का संचार हुआ कि शायद इनमें कोई ऐसा पूर्ण सक्षम व्यक्तित्व मिल सके, जिसके सामने मेरा सिर नमन हो या जो वास्तव में ही इन सारी क्रियाओं का जानकार हो।

मैं चाहता यह था कि ऐसे व्यक्तित्व को केवल 'थ्योरिटिकल' ज्ञान ही नहीं हो अपितु 'प्रैक्टिकल' ज्ञान भी हो, जिससे कि वह अपने ज्ञान का योगदान दूसरों को दे सके, समाज कल्याण में सहायक हो सके।

इन बीस वर्षों में मैंने यह भी अनुभव किया कि जिनके पास भी ऐसा ज्ञान होता है, उनकी मनोवृत्तियां दूषित हो जाती हैं, या उनका स्वभाव पूरी तरह से अक्खड़ किस्म को हो जाता है, बात करने में उन्हें कुछ भी होश नहीं रहता, या तो वे नशे में चूर रहते हैं, जिससे अपने अलावा उनको दीन-दुखिया की भी खबर नहीं रहती या वे इतने एकांतवासी हो जाते हैं कि दूसरों से बात करना भी हेठी समझते हैं। इसके अलावा ऐसे व्यक्ति क्रोधी और मनमर्जी के मालिक होते हैं। ऐसे लोग किस समय क्या कर बैठेंगे इसकी कल्पना नहीं की जा सकती। सीधे-सीधे बात करते-करते वे गालियां देने लग जाते हैं और कई लोगों को तो मैंने मार-पीट करते हुए भी देखा है।

मेरी धारणा यह है कि ज्ञान, ज्ञान होता है, चाहे वह किसी भी क्षेत्र का हो, ज्ञान के साथ नम्रता और व्यावहारिकता अवश्य होनी चाहिए। पर जो तांत्रिक अघोरी या मांत्रिक हैं उनका नम्रता से दूर का भी वास्ता नहीं रहता, वे अपने ही खयालों में मस्त, क्रोधी, अहंकारी और अपने आपको सर्वोच्च समझते हैं। बिना नम्रता के पूर्ण व्यक्तित्व संभव नहीं है। नम्रता के साथ यदि साधना होती है, तो वह व्यक्तित्व अपने आप में ही विशिष्ट बन जाता है।

मुझे कहीं पढ़ी हुई घटना स्मरण आ रही है। एक बार सारे ऋषि-मुनियों की सभा हुई और उसमें यह वाद-विवाद हुआ कि देवताओं में सर्वश्रेष्ठ देवता कौन है?

इसका भार भृगु ऋषि पर डाला गया और यह विचार हुआ कि ऋषियों में भृगु ऋषि श्रेष्ठ हैं, अतः वे किसी भी प्रकार से, किसी भी युक्ति से यह ज्ञात करें कि ब्रह्मा, विष्णु, महेश इन श्रेष्ठतम देवताओं में से सर्वश्रेष्ठ देवता कौन है, जिससे कि उनको सर्वोच्चता प्रदान की जा सके।

भृगु ऋषि सबसे पहले ब्रह्मलोक में गए। वहां ब्रह्माजी सृष्टि रचना में संलग्न थे। वे वहां जाकर दो क्षण तो उनके कार्य को देखते रहे और जब ब्रह्मा ने ऋषि को प्रणाम किया तो किसी भी प्रकार का आशीर्वाद या उत्तर नहीं दिया, इसके विपरीत उन्होंने लातों के प्रहार से जो कुछ उन्होंने निर्माण किया था, उसको तोड़-फोड़ दिया। यही नहीं अपितु इतना अधिक नुकसान कर दिया कि कई वर्षों की मेहनत बरबाद कर दी। ऐसा देखकर ब्रह्मा को क्रोध आ गया और ऋषि को पीटने के लिए उद्यत हो गए।

ऋषि ने जब के क्रोध से तमतमाते हुए ब्रह्मा के चेहरे को देखा और अनुभव किया कि किसी भी समय हाथापाई हो सकती है तो वे वहां से खिसक गए।

ब्रह्मलोक से निकल कर भृगु सीधे कैलास पर्वत की ओर गए, जहां महादेव का निवास स्थान था। वहां पर महादेव तथा पार्वती दोनों बातचीत में संलग्न थे।

ऋषि ने आव देखा न ताव और सीधे पार्वती के कंधे पर चढ़ गए। पार्वती हड़बड़ाकर उठ खड़ी हुई तो ऋषि फिर उचक कर उनके कंधों पर बैठने की कोशिश करने लगे।

प्रलयंकारी महादेव ने जब अपनी आंखों के सामने अपनी पत्नी के साथ इस प्रकार का अभद्र व्यवहार होते देखा तो उनके क्रोध का पारावार न रहा और तुरंत त्रिशूल उठाकर भृगु को मारने के लिए उनकी तरफ झपटे।

क्रोध से उनकी आंखें लाल हो रही थीं और जितने वेग से उन्होंने त्रिशूल उठाया, वह आश्चर्यजनक था, भृगु की मृत्यु निश्चित थी, पर वे इससे पूर्व ही वहां

से भाग खड़े हुए। कुछ दूरी तक तो महादेव ने पीछा किया, पर जितनी तेजी से भृगु भागे थे, वह आश्चर्यजनक था।

वहां से भृगु सीधे क्षीरसागर पहुंचे, जहां शेषनाग की शैया पर भगवान विष्णु लेटे हुए थे और लक्ष्मी उनके चरण दबा रही थीं।

भृगु ने जब ऐसा देखा तो तुरंत जोरों की एक लात विष्णु के सीने में दे मारी। यह देखकर शेषनाग क्रोध से फुफकार उठा और उसके फनों से ज्वालाएं-सी निकलने लगीं, लक्ष्मी एक बार तो हतप्रभ हो गईं, पर दूसरे ही क्षण उनका चेहरा क्रोध से लाल अंगारे की तरह दहक उठा।

पर इधर ज्यों ही भृगु की लात विष्णु के सीने पर लगी, त्यों ही विष्णु शांत चित्त से उठ बैठे और भृगु के चरणों को पकड़ कर दबाने लगे, बोले–''आपके चरण अत्यंत कोमल हैं और मेरा सीना अत्यंत कठोर, लात मारने से आपके चरणों को अवश्य ही चोट पहुंची होगी, इसका मुझे दुख है और इसके लिए क्षमाप्रार्थी हूं,'' कहते-कहते उनकी आंखों में आंसू छलछला आए।

भृगु उनकी नम्रता के सामने परास्त हो गए। उन्होंने कहा–''प्रभु मैं आपकी परीक्षा ले रहा था, वास्तव में ही देवताओं में आप सर्वोपरि हैं।''

वह व्यक्तित्व सर्वोच्च नहीं हो सकता जो विद्वान या ज्यादा ज्ञानवान हो, अपितु वह व्यक्तित्व महान है, जिसमें विद्वत्ता के साथ-साथ नम्रता भी हो।

मैंने इस प्रकार के व्यक्तित्व नहीं देखे, जिनमें विशिष्ट ज्ञान के साथ-साथ नम्रता भी हो। तांत्रिक और मांत्रिक क्षेत्र में मैंने विशिष्ट योगी और साधक तो अवश्य देखे, परंतु उनमें नम्रता का सर्वथा अभाव था। उनमें अहं की प्रवृत्ति जरूरत से ज्यादा थी, वे प्रशंसाप्रिय थे। उनको इससे आत्मतुष्टि मिलती थी। नम्रता और विद्वत्ता इन दोनों का संगम मुझे देखने को ही नहीं मिला, खास तौर से इस तांत्रिक क्षेत्र में।

अतः जब मैंने इस प्रकार के विशिष्ट तांत्रिक सम्मेलन की चर्चा सुनी और यह भी सुना कि इसमें सुदूर हिमालय स्थित साधक भी भाग लेंगे और इसमें केवल वे ही तांत्रिक या मांत्रिक भाग ले सकेंगे, जिनमें विशिष्ट ज्ञान हो या विशिष्ट तांत्रिक क्षमता हो तो मन में आशा का संचार हुआ कि शायद इस बार मेरी इच्छा पूर्ण हो जाए। हो सकता है इस बार मुझे खंड-खंड व्यक्तित्व के स्थान पर पूर्ण व्यक्तित्व से मिलना हो जाए, यह भी हो सकता है कि कोई ऐसा व्यक्ति या व्यक्तित्व मिल जाए जिसके सामने मेरा सर्वांग नतमस्तक हो सके और जिसे मैं गुरु शब्द से संबोधित कर सकूं।

यह तो मेरी धारणा थी ही कि मेरा गुरु वही हो सकेगा, जिसमें सभी प्रकार की तांत्रिक और मांत्रिक क्रियाओं का समावेश हो या इस क्षेत्र में उच्चतम ज्ञान से संपन्न हो, साथ ही वह ऐसा व्यक्तित्व हो जिसमें ज्ञान के साथ-साथ नम्रता का समावेश हो, वह केवल अघोरी, योगी या तांत्रिक ही नहीं हो अपितु सही शब्दों में मानव भी हो। मैं ऐसे ही मानव की खोज में था जो कि पूर्ण हो, क्योंकि गुरु 'पूर्णता' का ही पर्याय होता है।

इन सब बातों से मैं रोमांचित था और इसीलिए मैंने इस सम्मेलन में भाग लेने का निश्चय किया था, परंतु जब यह ज्ञात हुआ कि इसमें वही भाग ले सकता है जो उच्च साधना से संपन्न हो, अर्थात् तांत्रिक क्षेत्र में दस महाविद्याओं में से किसी एक विद्या को सिद्ध किया हो या वाममार्गी साधना में 'श्यामा साधना' सफलतापूर्वक संपन्न की हो, या गोरक्ष साधना में अघोर तंत्र के साथ पीतांबरी साधना संपन्न हो, या तांत्रिक क्षेत्र में संजीवनी विद्या में निष्णात हो, इस प्रकार के उन्होंने कुछ मापदंड रख दिए थे और जो व्यक्ति इनमें से किसी एक मापदंड पर खरा उतरता, उसी को इस सम्मेलन में भाग लेने का अधिकार दिया जाता।

मैंने भूत बाबा से तारा साधना सफलतापूर्वक संपन्न की थी और उसमें दक्षता भी थी, अतः मैंने क्रिया रूप में तारा संपन्न करके दिखा दी तो आयोजकों ने मुझे प्रवेश पत्र दे दिया। यह प्रवेश पत्र पाना ही मेरे लिए सौभाग्य का सूचक रहा, क्योंकि इसकी वजह से मैं इस सम्मेलन में भाग ले सका, विशिष्ट तांत्रिकों के संपर्क में आ सका और जो मेरा लक्ष्य था, जीवन की जो इच्छा थी वह पूरी हो सकी अर्थात् मुझे ऐसा गुरु प्राप्त हो सका जो मेरे मानस में अंकित था।

तांत्रिक सम्मेलन के प्रारंभ होने के एक दिन पहले मैं संयोजक स्वामी अभयानंदजी से मिला। वे अत्यंत व्यस्त थे और व्यस्तता से भी ज्यादा परेशान थे। उनकी परेशानी का मूल कारण यह था कि इतने बड़े आयोजन में किसी प्रकार की न्यूनता न रह जाए और उससे भी बड़ी चिन्ता की बात यह थी कि इसमें भाग लेने वाले सभी विशिष्ट साधक थे और उन सभी का स्वभाव अपने आप में अलग था। कुछ तांत्रिकों के बारे में तो यह भी सुना था कि वे साक्षात दुर्वासा के अवतार हैं, क्रोध तो उनकी नाक पर रहता है और थोड़ा-सा भी अनुचित या उनके मनोनुकूल न होने पर वे कुछ भी कर बैठते हैं, इस दृष्टि से संयोजक आदि परेशान थे तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं।

इस सम्मेलन के मूल में भूर्भुआ बाबा थे, जो कि मूलतः आध्यात्मिक संत हैं, परंतु इसके साथ-ही-साथ विशिष्ट तांत्रिक भी हैं। उनकी ख्याति भारत में ही नहीं, पूरे विश्व में है। तंत्र के क्षेत्र में और अध्यात्म के क्षेत्र में उनका नाम अत्यंत

श्रद्धा के साथ लिया जाता है। विशिष्ट व्यक्तियों को एक स्थान पर एकत्र करने में उनका सबसे बड़ा योगदान रहा है और इस सम्मेलन को संपन्न करने के मूल में उनकी ही प्रेरणा और परिश्रम रहा है।

मैं सम्मेलन के एक दिन पहले प्रयत्न करके भूर्भुआ बाबा से मिला तो वे शांत चित्त थे, फिर भी उनका मस्तिष्क अत्यंत क्रियाशील था। मैंने इस सम्मेलन के बारे में जब कुछ जानना चाहा तो उन्होंने कहा कि यह मेरे जीवन की कसौटी है। यदि यह दस दिन का सम्मेलन भली प्रकार से संपन्न हो गया तो मैं इसे अपने जीवन की श्रेष्ठ उपलब्धि ही मानूंगा।

भूर्भुआ बाबा के बारे में काफी कुछ सुन रखा था और उनके बारे में जो कुछ सुना था प्रत्यक्ष देख कर मुझे सुखद अनुभूति ही हुई थी। मूलतः वे तांत्रिक हैं परंतु पिछले कई वर्षों से उन्होंने अपना जीवन अध्यात्म के क्षेत्र में विकसित किया है। इनकी आयु के बारे में काफी मतभेद है। कुछ तांत्रिक इनकी आयु 600 वर्षों से भी ज्यादा बताते हैं और उनके पास इसका प्रमाण भी है, परंतु देखने पर वे 60-70 वर्ष से ज्यादा आयु के नहीं लगते। शांत और गंभीर मुखमंडल, पैनी दृष्टि और तेजस्वी व्यक्तित्व। उनसे बातचीत करते समय सुखद अनुभूति होती है। वे जो भी बात करते हैं, उसके पीछे उनका ठोस ज्ञान और दीर्घ अनुभव रहता है। वास्तव में ही वे अपने क्षेत्र के अत्यंत तेजस्वी व्यक्तित्व हैं।

दूसरे दिन प्रातः 10 बजे के लगभग सम्मेलन प्रारंभ हुआ। सम्मेलन के चारों तरफ भूर्भुआ बाबा के शिष्य मुस्तैदी से चौकस थे और उनको सख्त हिदायत थी कि केवल वे ही व्यक्ति इस सम्मेलन में प्रवेश करें, जिनके पास अनुमति पत्र हो, जिस व्यक्तित्व के बारे में संदेह हो, उसे वहीं पर रोक लिया जाए और तब तक अंदर जाने की अनुमति न दी जाए, जब तक कि बाबा स्वयं जांच-पड़ताल न कर लें। इस संबंध में सामने वाला व्यक्ति चाहे कितने ही उच्च कोटि का हो, चाहे कितना ही गरिमापूर्ण हो, प्रयत्न यही किया गया था कि सभी के पास परिचय-पत्र हो जो इसमें भाग लेने वाले थे। कई तांत्रिक तो प्रातः ही आए थे, फिर भी व्यवस्था में किसी प्रकार की न्यूनता नहीं थी और सभी को परिचय-पत्र जांच-पड़ताल करके दे दिए गए थे।

सम्मेलन में लगभग 400 तांत्रिक और मांत्रिक इकट्ठे थे और वास्तव में ही वे सभी एक-दूसरे से बढ़-चढ़कर थे। कोई किसी से अपने आपको न्यून नहीं समझ रहा था। सभी विशिष्ट साधनाओं से संपन्न थे और अपने क्षेत्र में दक्ष तथा लब्ध-प्रतिष्ठ व्यक्तित्व से संपन्न थे।

मैंने धार्मिक ग्रंथों में ही शिवजी की बरात के बारे में पढ़ा था, परंतु इस सम्मेलन को देख कर मैंने अनुमान लगा लिया कि शिवजी की बरात में किस प्रकार के व्यक्ति सम्मिलित हुए होंगे। सम्मेलन में 400 से कुछ ज्यादा ही साधु, योगी, अघोरी, तांत्रिक आदि थे और सभी की वेशभूषा अपने आप में विचित्र थी।

अधिकांश लंगोटी लगाए हुए थे और पूरे शरीर पर भभूत मली हुई थी। कुछ की जटाएं इतनी लंबी थीं कि चलने पर पीछे जमीन पर घिसटती थीं, कुछ ने तो लोहे की लंगोट ही लगा रखी थी। सम्मेलन में सौ से ऊपर साधु ऐसे भी थे जो सर्वथा निर्वस्त्र थे। कुछ तांत्रिकों ने हड्डियों की माला पहन रखी थी। एक तांत्रिक ने तो गले में 11 नरमुंडों की माला ही पहनी हुई थी। किसी-किसी तांत्रिक के गले में विचित्र मणियों की माला थी तो कुछ साधु इतने अधिक कपड़े पहने हुए थे कि उनका सारा शरीर उन कपड़ों में छिप गया था। एक साधु ने कमर पर नरमुंडों की करधनी बांध रखी थी।

इसमें कुछ भैरवियां भी थीं, संभवतः उनकी संख्या 15 से 20 के बीच में थी। इसमें कुछ तो पूर्णतः वृद्ध दिखाई दे रही थीं पर एक-दो भैरवियां ऐसी भी थीं जो अत्यंत सुंदर और तेजस्वी थीं और उनकी आयु 20 से 25 वर्ष के बीच होगी, मुझे आश्चर्य था कि इस छोटी आयु में उन्होंने किस प्रकार से इतनी कठिन क्रियाओं को संपन्न कर लिया होगा, परंतु तांत्रिकों की गति विचित्र है, हो सकता है उन्होंने कुछ क्रियाओं के माध्यम से अपनी आयु को बांध रखा हो और अपने यौवन को अक्षुण्ण बनाए रखा हो।

कुछ हठ योगी भी थे। एक हठ योगी का पांव इतना अधिक फूला हुआ था कि उसका घेरा छह फुट से ज्यादा ही होगा। कुछ हठ योगी विशालकाय थे, एक दो हठ योगी के हाथ लकड़ी की तरह ठूंठ हो गए थे। इस सम्मेलन में काफी अघोरी भी थे जो कि पूर्णतः निर्वस्त्र थे और देखने में भीमकाय राक्षस की तरह लग रहे थे, उनके शरीर पर जरूरत से ज्यादा मैल जमा हुआ था और जब वे पास से गुजरते तो दुर्गंध का एक भभका-सा अनुभव होता, परंतु वे इन सबसे बेखबर थे और अपनी ही धुन में मस्त थे।

इनमें कुछ विशिष्ट वाममार्गी तांत्रिक भी थे, जिनको यदि सामान्य जन देख लें, तो बेहोश हो जाएं। उनका शरीर अपने आप में भयंकर था, लाल आंखें, डरावना चेहरा और भीमकाय शरीर, ऐसा लग रहा था जैसे वे राक्षस हों। उनको देखकर मन में भय का-सा संचार होता था और रोंगटे खड़े हो जाते थे।

स्वामी अभयानंद जरूरत से ज्यादा व्यस्त थे और प्रत्येक को यथोचित स्वागत दे रहे थे, भूर्भुआ बाबा बराबर इस बात पर नजर रखे हुए थे कि किसी भी साधक के मन को ठेस न पहुंचे और वे उपयुक्त स्थान ग्रहण कर लें।

इसमें आशा से अधिक तांत्रिकों और मांत्रिकों ने भाग लिया और जिनके बारे में हम आश्चर्य के साथ सुनते रहते थे, उनको प्रत्यक्ष देखकर एक भयमिश्रित आचर्श्य हो रहा था। वास्तव में यह भूर्भुआ बाबा का ही कमाल था कि वे इस प्रकार के विशिष्ट साधकों को एक स्थान पर एकत्र कर पाए।

सम्मेलन में मां कृपाली भैरवी, आनंदा भैरवी, पिशाच सिद्धियों की स्वामिनी देबुल भैरवी आदि के भाग लेने से सम्मेलन में विशेष प्रसन्नता अनुभव हो रही थी। इसके साथ-ही-साथ पगला बाबा, स्वामी देवहुर बाबा, कृपालु स्वामी, बाबा भैरवनाथ, खर्परानंद भारती, स्वामी गिरजानंद, अघोरी विरघा स्वामी, त्रिजटा अघोरी आदि ऐसी विभूतियां थीं, जो कि अपने आप में अन्यतम थीं, जिनका नाम विश्वविख्यात है और तांत्रिक लोगों के लिए ये व्यक्तित्व स्मरणीय हैं। इन्होंने इस क्षेत्र में अद्‌भुत सिद्धियां प्राप्त की हैं। हमारी पीढ़ी का यह सौभाग्य है कि हम लोगों के बीच इस प्रकार के विशिष्ट व्यक्तित्व हैं, जिन्होंने अपने ज्ञान से इस पीढ़ी को ऊंचा उठाने में सहायता दी है। विशेष रूप से मैं रोमांचित था कि अपने जीवन में मैं इन सारी विभूतियों को एक स्थान पर देख सका, अन्यथा यदि मेरा पूरा जीवन भी बीत जाता तब भी मैं इन सारी विभूतियों के दर्शन नहीं कर सकता था। मैं ही नहीं, मेरे जैसे अधिकांश तांत्रिक रोमांचित थे, आह्लादित थे, आश्चर्यचकित थे।

सम्मेलन के प्रारंभ में भूर्भुआ बाबा ने विशिष्ट वाणी में इस सम्मेलन के बारे में बताया और अत्यधिक प्रसन्नता अनुभव की कि उनके कहने से सभी साधक एक स्थान पर एकत्र हुए। उन्होंने बताया कि पिछले पांच हजार वर्षों में यह पहला अवसर है, कि इस प्रकार का सम्मेलन संभव हो सका है। कुछ साधक सिद्धाश्रम से भी आए हैं, यह मेरे लिए अत्यंत गौरवपूर्ण उपलब्धि है।

उन्होंने आगंतुक तांत्रिकों, मांत्रिकों, योगियों, साधकों, हठयोगियों और अघोरियों से विनम्रतापूर्वक निवेदन किया कि वे शांत चित्त से इस सम्मेलन को सफल बनाने में योगदान दें। सभी साधक अपने आप में अन्यतम हैं, इसलिए परस्पर वाद-विवाद हो जाना स्वाभाविक है, पर इस प्रकार वाद-विवाद से व्यर्थ में समस्याएं पैदा होंगी, एक-दूसरे पर तांत्रिक-प्रहार होंगे और व्यर्थ में ही शक्ति का अपव्यय होगा, अतः जहां तक हो सके तो वे अपने क्रोध को सीमित रखें और एक-दूसरे को ज्ञान देने में उदारता बरतें।

उन्होंने देश की परिस्थिति पर भी संक्षिप्त प्रकाश डाला, साथ ही उन्होंने दुख प्रकट किया कि पिछले 300 वर्षों का समय तंत्र के देश में अंधकार-युग ही कहा जाएगा, जबकि इस विद्या पर भीषण प्रहार हुए हैं और इस साधना को केवल मात्र

मारक-विद्या मान ली गई है। तंत्र का नाम लेते ही जन-साधारण भयभीत हो जाता है, उनके मानस में यह धारणा बन गई है कि तांत्रिक केवल किसी को मार सकता है या दुख पहुंचा सकता है। उनकी धारणा के अनुसार मोहन, वशीकरण, उच्चाटन आदि क्रियाएं ही तंत्र हैं, जबकि तंत्र इससे कहीं ऊंचे स्थान पर स्थित है और इससे पूरे विश्व का कल्याण हो सकता है।

यह विद्या हमारे पूर्वजों की थाती है तथा इस क्षेत्र में पूरा विश्व भारत की तरफ ताक रहा है। उनको इस क्षेत्र में जब भी ज्ञान मिलेगा तो वह भारत की तरफ से ही मिल सकता है, पर धीरे-धीरे नकली तांत्रिक समाज में घुस गए हैं, जिन्होंने चमत्कार दिखाने को ही तंत्र मान लिया है और इस प्रकार वे जहां तंत्र का अहित कर रहे हैं, वहीं दूसरी ओर जन-साधारण को गुमराह भी कर रहे हैं।

ऐसी स्थिति में तांत्रिक यदि अंतर्मुखी बन कर रह जाता है तो यह बहुत बड़ी भूल है। वे देश के निर्माण में रचनात्मक योगदान दे सकते हैं। इस क्षेत्र की जो विशिष्ट क्रियाएं हैं वे धीरे-धीरे लुप्त होती जा रही हैं, जल-गमन, वायु-गमन, परकाय प्रवेश, आदि क्रियाएं कुछ साधकों के पास ही रह गई हैं और वे साधक जनमानस से इतने दूर हो गए हैं कि उनसे ये विद्याएं प्राप्त करना संभव ही नहीं रहा है, उनकी काया के साथ-ही-साथ इस प्रकार की विद्याएं भी समाप्त हो जाएंगी और हमारा देश एक बहुत बड़ी निधि से वंचित हो जाएगा।

देश की सेवा केवल राजनीति के माध्यम से ही संभव नहीं है, अपितु कई ऐसे क्षेत्र भी हैं, जिनके माध्यम से देश सेवा और जन सेवा हो सकती है, इस प्रकार के क्षेत्रों में तंत्र और मंत्र सर्वोपरि है, जब तक इन विद्याओं के प्रति जो भ्रामक धारणाएं जनमानस में फैली हुई हैं वे दूर नहीं होंगी तब तक इन साधनाओं के प्रति आस्था जनमानस में नहीं हो सकेगी।

उन्होंने तांत्रिकों, मांत्रिकों और साधकों को आह्वान किया कि वे जनसाधारण से अपने आपको सम्पर्कित करें और अपने ज्ञान को इस प्रकार से समाज में वितरित करें, जिससे कि सामान्य साधक भी लाभ उठा सकें।

भूर्भुआ बाबा के बारे में सभी लोग श्रद्धानत हैं, क्योंकि उनका व्यक्तित्व अपने आप में विशिष्ट रहा है और उन्होंने अपने जीवन में इस क्षेत्र में अद्वितीय कार्य किया है। बाबा के भाषण को सभी लोग शांत चित्त से सुन रहे थे। एक-दो अघोरियों ने इसका प्रतिवाद भी किया और बीच में कुछ कहने के लिए व्यग्र भी दिखाई दिए, पर पास के साधकों द्वारा उनको जबर्दस्ती बिठा दिया गया, जिससे वे और ज्यादा बिफर गए और भाषण में क्रोध प्रदर्शन हेतु खड़े रहे।

भाषण की समाप्ति के साथ बाबा ने कहा कि सम्मेलन के लिए सभापति

चुना जाए और ऐसे व्यक्ति को सभापति बनाया जाए जो कि किसी एक ही क्षेत्र में निष्णात न हो अपितु उसकी गति सभी प्रकार की विद्याओं में समान रूप से हो। तांत्रिक और मांत्रिक समाज में वह वृद्ध नहीं कहलाता जो कि आयु से वृद्ध होता है अपितु वह वृद्ध कहलाता है जो कि ज्ञान से वृद्ध होता है।

एक साधक ने भूर्भुआ बाबा से ही निवेदन किया कि आप अध्यक्ष पद को संभाल लें, पर अब तक जो दो अघोरी सम्मेलन में खड़े थे, उन्होंने इसका डटकर विरोध किया। उन्होंने कहा कि भूर्भुआ केवल तांत्रिक हैं मांत्रिक नहीं हैं। अतः मांत्रिकों की जिज्ञासाओं का समाधान वह नहीं कर सकेंगे।

भूर्भुआ बाबा ने स्वयं इस बात का अनुमोदन किया और वे एक तरफ बैठ गए। स्वामी कृपाचार्य ने मां कृपालु भैरवी का नाम अध्यक्ष पद के लिए रखा पर त्रिजटा अघोरी ने इसका विरोध किया, क्योंकि ये केवल भैरवी हैं और अन्य कसौटियों पर खरी नहीं उतर सकतीं, उन्होंने चैलेंज भी दिया कि यदि भैरवी मेरी साधना का सामना कर लें तो मैं इन्हें अध्यक्ष मान सकता हूं, पर मां भैरवी ने इस चैलेंज को स्वीकार नहीं किया।

कुछ साधकों ने पगला बाबा से निवेदन किया, पर उन्होंने स्वयं इस तथ्य को स्वीकार किया कि मैं तांत्रिक अवश्य हूं पर वाममार्गी साधना का अभ्यास मैंने नहीं किया है, अतः मैं अध्यक्ष पद के लिए उपयुक्त नहीं हो सकता। इसके बाद कुछ अन्य नामों पर भी चर्चा हुई, पर अन्य लोगों ने उनका भी विरोध किया और सभा में एक घंटे भर की इस बहस में कोई निर्णय नहीं हो सका कि कौन व्यक्ति इस सभा का संचालन करे।

कुछ अघोरियों ने हठ योगी स्वामी प्रेत बाबा का नाम सुझाया तो एक तांत्रिक ने खड़े होकर प्रेत बाबा को चुनौती दे दी कि यदि वह मेरी कृत्या का सामना कर लें तो मैं उनको सभापति स्वीकार कर सकता हूं, साथ-ही-साथ उन्होंने यह भी बता दिया कि मैंने संहारिणी कृत्या सिद्ध कर रखी है।

कृत्या अपने आप में पूर्णतः मारक प्रयोग है और कहते हैं कि जब शंकर ने दक्ष का यज्ञ विध्वंस किया था तो उन्होंने कृत्या का ही सहारा लिया था। ऊंचे-से-ऊंचा तांत्रिक भी कृत्या के प्रयोग से घबराता है और उसका सामना नहीं करता, क्योंकि कृत्या प्रयोग के बाद सामने वाला साधक एक क्षण भी जीवित नहीं रह सकता। कृत्या स्वयं उस साधक को समाप्त कर देती है। दक्ष अपने आप में विशिष्ट ऋषि एवं अन्यतम तांत्रिक थे, परंतु वे भी कृत्या का समाना नहीं कर पाए थे, यद्यपि उन्होंने यज्ञ को बचाने में अपनी सारी सिद्धियों का प्रयोग कर लिया था पर वे सिद्धियां कृत्या के सामने निरुपाय हो गई थीं।

मैंने सुन रखा था कि संसार में कुछ तांत्रिक ही ऐसे जीवित हैं जो कृत्या सिद्ध करना जानते हैं या सिद्ध करके उसका प्रयोग कर सकते हैं। जब उस तांत्रिक ने कृत्या का नाम लिया तो मैं चौकन्ना हो गया। वास्तव में ही उस समय उसका चेहरा लाल भभूका हो रहा था और वह किसी भी समय प्रयोग करने में आमादा था, उसके चेहरे पर कठोरता और दृढ़ता स्पष्ट दिखाई दे रही थी।

यदि कृत्या का प्रयोग होता तो सामने वाला व्यक्ति ही नहीं आस-पास के लोग भी हताहत होते, फिर भले ही वे कितने ही बड़े तांत्रिक या साधक हों। भूर्भुआ बाबा ने इस खतरे को एक क्षण में भांप लिया और उन्होंने उस साधक से शांत रहने की प्रार्थना की और कृत्या का प्रयोग न करने की याचना की।

कृत्या प्रयोग में भी संहारिणी कृत्या सर्वाधिक उग्र और विनाशकारी होती है। इसके बारे में काफी कुछ पढ़ रखा था, परंतु ऐसा व्यक्तित्व नहीं मिला था जो कि इस साधना को जानता हो। आज जब उन्हें देखा तो मन में सुखद आश्चर्य भी हुआ कि अभी तक विश्व में कृत्या प्रयोग करने वाले साधक जीवित हैं।

कृत्या का समाधान कृत्या से ही संभव है। साधक यदि संहारिणी कृत्या का प्रयोग करे तो सामने वाले का बचाव तभी संभव है, जबकि वह संहारिणी कृत्या का प्रयोग जानता हो और इस प्रयोग को खेचरी कृत्या के माध्यम से नष्ट कर सकता हो। जैसा कि मैंने सुन रखा था, इस प्रकार के साधक बहुत कम रहे हैं।

पगला बाबा ने क्षमा याचना की और उन्होंने अध्यक्ष पद स्वीकार करने में असमर्थता प्रकट की, साथ ही उन्होंने निवेदन भी किया कि कृत्या का प्रयोग इस सम्मेलन में न करें, अन्यथा काफी विध्वंस और संहार हो जाएगा। पगला बाबा ने कृत्या प्रयोग के बारे में अनभिज्ञता भी स्वीकार की।

बाद में मुझे मालूम हुआ कि पगला बाबा को चैलेंज देने वाले धूर्जटा अघोरी थे। धूर्जटा अघोरी के बारे में बहुत कुछ सुन रखा था। यह भी सुन रखा था कि वे नई सृष्टि रचना विधि भी जानते हैं। पुराणों में पढ़ा था कि विश्वामित्र ने ब्रह्मा के कार्य से असंतुष्ट होकर नई सृष्टि-रचना आरंभ कर दी थी, इससे पूरे देव समाज में खलबली मच गई थी और जब देवताओं और ऋषियों ने विश्वामित्र से प्रार्थना की, तभी उन्होंने नवीन सृष्टि रचना कार्य बंद किया था।

मैंने धूर्जटा अघोरी के बारे में बहुत पहले सुन रखा था। तब मन में यह साध थी कि शायद कभी इस विराटकाय व्यक्तित्व के दर्शन होंगे, पर आज जब मैंने उनको देखा तो आश्चर्यचकित रह गया। यद्यपि कृत्या के प्रयोग को जानने वाले उस सम्मेलन में और भी साधक थे, जिनमें त्रिजटा अघोरी, देवहुर बाबा आदि के नाम उल्लेखनीय हैं, पर वे शांत रूप में बैठे रहे।

कुछ-कुछ ऐसा अनुभव होने लगा था कि यह सम्मेलन शायद ही पार पड़े, जबकि इसके श्रीगणेश में ही बाधाएं आ रही हैं। यह तो मेढकों को एक तराजू पर रखकर तोलना था। वास्तव में ही इन साधकों को और उनके अहं को संतुष्ट करना अत्यंत कठिन था, क्योंकि सभी साधक अपने आप में विशिष्ट व्यक्तित्व साधनाओं से संपन्न थे और प्रत्येक का अहं अपने आप में प्रबल था। कोई भी किसी से दबने वाला नहीं था, कोई भी किसी को अपने से उच्च मानने के लिए तैयार नहीं था।

इस हो-हल्ले में दो-तीन नाम और सुझाए गए, परंतु कुछ लोगों ने उनका प्रबल विरोध किया और चैलेंज भी दिया, फलस्वरूप उनके नामों पर पूरी तरह से विचार नहीं हो सका।

तांत्रिक सम्मेलन के समय डॉ॰ श्रीमाली

एक राय यह भी बनी कि इस सम्मेलन में कोई भी सभापति न बने और सभी अपने आपको सभापति ही मानकर कार्य आगे बढ़ाएं। परंतु कुछ साधकों ने इसका प्रबल प्रतिरोध किया। उनका आग्रह था कि बिना सभापति के संचालन सही रूप में नहीं हो सकेगा और सभी अपने तरीके से बोलेंगे, जिससे एक बात दूसरा नहीं सुन सकेगा और इस प्रकार उन पर सही प्रकार से नियंत्रण नहीं हो सकेगा।

व्यवस्था और मर्यादा बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है कि सभापति का चुनाव हो। उनका तर्क यह भी था कि यदि हम सभापति के नाम पर एकमत नहीं हो सकते तो अन्य विषयों पर एकमत कैसे हो सकेंगे?

इस सारे वाद-विवाद में दोपहर का एक बज गया तब मध्याह्न-साधना का समय अनुभव कर भूर्भुआ बाबा ने सुझाव रखा कि कुछ साधक नियमित रूप से मध्याह्न-साधना करते हैं, अतः यह बैठक इस समय स्थगित की जाती है और चार बजे जब हम सब एकत्र हों तब इस विषय पर पुनः विचार कर लें और सभापति का चयन हो जाए।

भूर्भुआ बाबा के इस सुझाव के साथ ही प्रातःकालीन बैठक हो-हल्ले के साथ स्थगित हो गई। मैं आश्चर्यचकित भी था और दुखी भी था। आश्चर्यचकित इसलिए था कि इस सम्मेलन में विभिन्न साधनाओं से संपन्न साधक हैं, किसी एक ही विषय का सम्मेलन हो तो श्रेष्ठता ज्ञात की जा सकती है, पर जब विभिन्न साधनाओं से संपन्न साधक हों तो सर्वोपरि व्यक्ति का चयन कठिन हो जाता है। क्योंकि जो तांत्रिक क्षेत्र में सर्वोपरि हो वह मंत्र के क्षेत्र में भी श्रेष्ठ हो यह आवश्यक नहीं है, या यदि कोई व्यक्ति तंत्र और मंत्र के क्षेत्र में सर्वोपरि हो तो यह गोरक्ष साधना या अघोर साधना में भी निष्णात हो यह संभव नहीं है। ये सभी साधनाएं एक-दूसरे से सर्वथा विपरीत हैं और अपने आप में कष्टकर हैं, अतः इन सभी क्षेत्रों में एक ही व्यक्ति निष्णात हो ऐसा कम देखने में आया है। यद्यपि इस पृथ्वी पर असंभव नाम की कोई वस्तु नहीं है, फिर भी प्रातःकालीन बैठक में जिस प्रकार से चैलेंज दिए जा रहे थे और चैलेंज आते ही सामने वाला व्यक्ति जिस प्रकार से निस्तेज हो जाता था, उसको देखते हुए सभी क्षेत्रों में निष्णात या विशिष्ट व्यक्तित्व सामने आ जाए ऐसा असंभव नहीं तो कठिन अवश्य लग रहा था।

गोष्ठी के बाद भी सभी साधक उग्र थे और कुछ तांत्रिक और वाममार्गी साधक तो अत्यंत ही क्रोध की मुद्रा में थे कि उनके रहते हुए अन्य साधना में निष्णात व्यक्ति सभापति बन जाए ऐसा कैसे संभव है? उन्होंने यह भी मत स्पष्ट कर दिया कि यदि हम पर किसी व्यक्ति को सभापति के रूप में थोपा गया तो हम किसी भी प्रकार का प्रयोग उसके विरुद्ध करने में हिचकिचाएंगे नहीं, या तो वह उस